|  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| |  | | --- | |  | |  |  | |  | | --- | |  | |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |
| **ST. JOSEPH’S COLLEGE (AUTONOMOUS), BANGALORE-27** | | | | | | |
| **B.A.** **B.SC. SANSKRIT - IV SEMESTER** | | | | | | |
| **SEMESTER EXAMINATION: APRIL 2017** | | | | | | |
| **SA 415 - Sanskrit** | | | | | | |
| **Time- 2 1/2 hrs** | |  | **Max Marks-70** | | |

I. एकपदेन उत्तरत 10×1=10

1. वसन्तकः कः?

अ. उज्जयिन्याः राजा कः?

आ. कः अनतिक्रमणीयः?

इ. यौगन्धरायणः कः?

ई. किं श्रवणम् अयुक्तम्?

उ. ब्रह्मचारी कः?

ऊ. अञ्जलिः कै पूरितम्?

ऋ. कन्दुकेन का क्रीडति?

ॠ. का साधुजनागता नोत्कण्ठयिष्यति?

लृ. महाराजस्य भगिनी का?

ए. ब्रह्मचारी लावणकं ग्रामं किमर्थं त्यजति?

ऐ. रुमण्वान् कः?

II. सन्दर्भं वर्णयत 4×2½=10

2. सुखमन्यद् भवेत् सर्वं दुःखं न्यासस्य रक्षणम्।

3. तस्मिन् सर्वमधीनं हि यत्राधीनो नराधिपः।

4. दग्धेति ब्रुवता पूर्वं वाञ्चितोऽस्मि रुमण्वता।

5. यद् यस्यास्ति समीप्सितं वदतु तत् कस्याद्य किं दीयताम्।

6. प्राणी प्राप्य रुजा पुनर्न शयनं शीघ्रं स्वयं मुञ्चति।

III. श्लोकस्य अन्वय-तात्पर्य-व्याकरणांशान् लिखत 3×5=15

7. इयं बाला **नवेद्वाहा** सत्यं श्रुत्वा व्यथां व्रजेत्।

कामं धीरस्वभावेयं स्त्रीस्वभावस्तु कातरः॥

8. अस्य स्निग्धस्य वर्णस्य विपत्तिर्दारूणा कथम्।

इदं च मुखमाधुर्यं कथं दूषितमग्निना॥

9. संबन्धिराज्यमिदमेत्य महान् प्रहर्षः, स्मृत्वा पुनर्नृपसुतानिधनं विषादः।

किं नाम दैव ! भवता यदि न कृतं स्यात्, राज्यं परैरपहृतं कुशलं च देव्याः॥

10. भरतानां कुले जातो वीनीतो ज्ञानवाच्छुचिः।

तत्रार्हसि बलाद्धर्तुं राजधर्मस्य देशिकाः॥

IV. सविस्तारेण लिखत 2×10=20

11. यौगन्धरायणस्य उपायान् परिणामान् च लिखत

12. पञ्चमाङकं वर्णयत

13. स्वप्नवासवदत्तानाटकमधिकृत्य संक्षेणेण लिखत

V. परिच्छेदं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत 7

आसीत् पुरा कोऽपि महातपा नाम वनवासी मुनिः। एकदा यदा सः तरुच्छायोपविष्ट आसीत् तदा तस्योपरि एका बलाका विष्ठाम् उदसृजत्। स च क्रुद्धस्तां व्यलोकयत्। दृष्टमात्रा एव बलाका भस्मसाद् अभूत्। ततश्च स मुनिः तपः प्रभावात् अहङ्कारम् उपगतः। एकदा असौ मुनिः क्वापि नगरे एकं ब्राह्मणगृहम् एत्य तद्गृहीणीं भिक्षामयाचत। सा पतिव्रता गृहीणि तमवदत्- “प्रतीक्षस्व क्षणं यावत् भर्तुः परिचर्यां समापये” इति। एतत् श्रुत्वा स मुनिः तां कोपदृष्ट्या दृष्टवान्। स विहस्य अभाषत- “मुने! न अहं बलाकेति”। तत् आकर्ण्य विस्मितः मुनिः “ एतत् कथमिव ज्ञातमनया ” इति चिन्तयन् तत्र उपविशति।

14. मुनिः कस्मात् कारणाद् अहङ्कारमुपागतः?

क. बलाकावृत्तान्तः कया ज्ञातः?

ख. साध्वी किम् धर्मकार्यं करोति स्म?

ग. यदा मुनिः गृहीणीं भिक्षामयाचत तदा सा किम् अवदत्?

घ. “तरुच्छायोपविष्ट” इत्यत्र कः सन्धिः?

ङ. गद्यांशे विद्यमानं प्रत्ययद्वयं चित्वा लिखत

च. अस्य अनुच्छेदस्य समुचितशीर्षकं लिखत

VI. संस्कृते अनुवादं कुरुत 8

15. FATE PREVAILS

There was a snake-charmer. He caught serpents and made a living. One day he brings a serpent. He puts the serpents in a box. He exhibits the serpent every day. He makes living.

Once the snake -charmer went to another village. His wife and son also went with him. The snake- charmer did not come. The serpent had no food at all. The serpent tried to get out. It was hungry. Hence it had no energy. It failed (to come out).

Then a tar came near the box. It saw the box. It thought – “there are eatables in it”. It decided to make hole. It made a hole and entered it. The rat fell into the mouth of the serpent. The serpent ate the rat. Through that hole itself it went out. Ah! Good luck of the serpent. Bad luck for the rat!

OR

**ಅದೃಷ್ಟವೇ ಹೆಚ್ಚಿನದು**

ಒಬ್ಬ ಹಾವಾಡಿಗನು ಇದ್ದನು. ಅವನು ಹಾವುಗಳನ್ನು ಹಿಡಿದು ಜೀವನವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದನು. ಒಮ್ಮೆ ಅವನು ಒಂದು ಸರ್ಪವನ್ನು ತರುತ್ತಾನೆ. ಹಾವನ್ನು ಪೆಟ್ಟಿಗೆಯಲ್ಲಿ ಇಡುತ್ತಾನೆ. ಪ್ರತಿದಿನವೂ ಹಾವಿನ ಪ್ರದರ್ಶನವನ್ನು ಮಾಡುತ್ತಾನೆ. ಜೀವನ ಮಾಡುತ್ತಾನೆ.

ಒಮ್ಮೆ ಹಾವಾಡಿಗನು ಬೇರೆ ಹಳ್ಳಿಗೆ ಹೋದನು. ಅವನ ಹೆಂಡತಿ ಮತ್ತು ಮಕ್ಕಳೂ ಹೋದರು. ಹಾವು ಪಾಟ್ಟಿಗೆಯಲ್ಲಿಯೇ ಉಳಿಯಿತು. ಐದು ದಿನಗಳು ಕಳೆದವು. ಹಾವಾಡಿಗನು ಹಿಂದುರುಗಲಿಲ್ಲ. ಸರ್ಪಕ್ಕೆ ಆಹಾರವೇ ಇಲ್ಲ. ಹಾವು ಹೊರಗೆ ಬರಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿತು. ಅದು ಹಸಿದಿತ್ತು. ಆದ್ದರಿಂದ ಶಕ್ತಿಯೇ ಇಲ್ಲದೆ ವಿಫಲವಾಯಿತು.

ಆಗ ಪೆಟ್ಟಿಗೆಯ ಬಳಿ ಒಂದು ಇಲಿಯು ಬಂದಿತು. ಅದು ಪೆಟ್ಟಿಗೆಯನ್ನು ನೋಡಿತು. ‘ಪೆಟ್ಟಿಗೆಯಲ್ಲಿ ತಿಂಡಿಗಳು ಇವೆ’ ಎಂದು ಇಲಿಯು ಆಲೋಚಿಸಿತು. ‘ನಾನು ತೂತು ಮಾಡುತ್ತೇನೆ’ ಎಂದು ಅದು ತೂತನ್ನು ಮಾಡಿ ಒಳಗೆ ಪ್ರವೇಶಿಸಿತು. ಇಲಿಯು ಹಾವಿನ ಬಾಯಿಯಲ್ಲಿಯೇ ಬಿದ್ದಿತು. ಹಾವು ಇಲಿಯನ್ನು ತಿಂದಿತು. ಅದೇ ತೂತಿನಿಂದಲೇ ಹೊರಗೆ ಹೊರಟು ಹೋಯಿತು.

ನಿಜವಾಗಿಯೂ ಹಾವಿನ ಅದೃಷ್ಟ! ಇಲಿಯ ದುರದೃಷ್ಟ!!